परमात्म ऊर्जा

कोई बात अति में जाती है तो उसको तूफान कहा जाता है। एक गुण तूफान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो तो अच्छा लगेगा? नहीं। तो ऐसे अपने में पॉवरफुल धारणा करनी है। जैसे चाहो वहाँ अपने को टिका सको। ऐसे नहीं कि बुद्धि रूपी पांव टिक ना सके। बैलेन्स ठीक ना होने कारण टिक नहीं सकते। कब कहां, कब कहां गिर जाते व हिलते-जुलते रहते हैं। यह बुद्धि की हलचल होने का कारण समानता नहीं है अर्थात् सम्पन्न नहीं है। कोई भी चीज़ अगर फुल हो तो उसके बीच में कब हलचल नहीं हो सकती। हलचल तब होती है जब कमी होती है, सम्पन्न नहीं होता है। तो यह बुद्धि में व्यर्थ संकल्पों की व माया की हलचल तब मचती है जब फुल नहीं हो, सम्पन्न नहीं हो। दोनों में सम्पन्न व समानता हो तो हलचल हो ही नहीं सकती। तो अपने आपको किसी भी हलचल से बचाने के लिए सम्पन्न बनते जाओ तो सम्पूर्ण हो जाएंगे।

सम्पूर्ण स्थिति व सम्पूर्ण स्टेज अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु का प्रभाव ना निकले- यह तो हो ही नहीं सकता। चन्द्रमा भी जब 16 कला सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी हरेक को अपनी तरफ आकर्षित करता है। कोई भी वस्तु सम्पन्न होती है तो अपने आप आकर्षण करती है। तो सम्पूर्णता की कमी के कारण विश्व की सर्व आत्माओं को आकर्षण नहीं कर पाते हो। जितनी अपने में कमी है उतना आत्माओं को अपनी तरफ कम आकर्षित कर पाते हो। चन्द्रमा की कला कम होती है तो किसका अटेन्शन नहीं जाता है। जब सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी सभी का अटेन्शन जाता है। कोई देखे ना देखे, लेकिन ज़रूर देखने में आता ही है। सम्पूर्णता में प्रभाव की शक्ति होती है। तो प्रभावशाली बनने के लिए सम्पन्न बनना पड़े। समझा?

अगर बैलेन्स ठीक नहीं होता है तो हिलने-जुलने का जो खेल करते हो, वह साक्षी हो देखो तो अपने ऊपर भी बहुत हंसी आवे। जैसे कोई अपने पूरे होश में नहीं होता है तो उनकी चलन देख हंसी आती है ना। तो अपने आपको भी देखो- जब माया थोड़ा बहुत भी बेहोश कर देती है, अपनी श्रेष्ठ स्मृति का होश गायब कर देती है, तो उस समय चाल कैसी होती है? वह नज़ारा सामने आता है? उस समय अगर साक्षी हो देखो तो अपने आप पर हंसी आवेगी।

बापदादा साक्षी होकर खेल देखते हैं। हरेक बच्चे का तो... ऐसा खेल दिखाना अच्छा लगता है? बापदादा क्या देखना चाहते हैं, उसको भी तुम जानते हो। जब जानते हो, मानते भी हो, फिर चलते क्यों नहीं हो? तीन कोने ठीक हों बाकी एक ठीक ना हो, तो क्या होगा? चारों ही बातें जानते हुए भी, मानते हुए भी, वर्णन भी करते हो लेकिन कुछ चलते हो, कुछ नहीं चलते हो। तो कमी हो गई ना। अभी इस कमी को भरने का प्रयत्न करो।

कथा सरिता

अंकुर को क्रिकेट खेलने का बहुत शौक था। जब भी उसके दोस्तों का ग्रुप मैदान में जाता, वो भी अपने बल्ले और गेंद के साथ वहाँ पहुंच जाता। उसका बैटिंग स्टाइल देखकर लोग अक्सर तारीफ किया करते थे। पर खेल-कूद के साथ-साथ उसकी प्राथमिकता हमेशा पढ़ाई रही। अंकुर के दोस्त उसके पढ़ाई में तेज होने के साथ ही उसकी मदद के लिए हमेशा तैयार रहते। हालांकि, वो अपनी कक्षाओं में सबसे आगे होता, लेकिन उसका दिल कुछ और करना चाहता था।

वो इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने निकला। बड़े शहर में जाकर उसने इंजीनियरिंग की जहाँ उसका संघर्ष और भी बड़ा हो गया। नए माहौल में कदम रखते ही उसने खुद को निखारने का काम शुरू कर दिया। वो अपने सपनों की उड़ान के लिए खुद को तैयार कर रहा था। लेकिन उसके दिल में हमेशा से एक खलिश(कसक) थी वो सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए कुछ करना चाहता था।

इंजीनियरिंग के बाद उसे एक अच्छी कंपनी में नौकरी मिल गई, लेकिन वो खुश नहीं था। दिन ब दिन वो अपने मन की आवाज़ सुनता रहा। अंकुर का स्वभाव भावुक और संवेदनशील था और जब समाज में होने वाली नाइंसाफी को देखता, तो उसे बेचैनी महसूस होती। वो कुछ बड़ा करना चाहता था, जिससे समाज में बदलाव आ सके। अंकुर के जीवन में एक दिन ऐसा आया जब उसने ठान लिया कि उसे कुछ अलग करना है। एक दिन उसने अपने पिता से कहा, "पापा, मैंने इंजीनियरिंग की है, पर मेरा मन किसी और काम में लगता है। मैं देश की सेवा करना चाहता हूँ। मैं पुलिस अफसर बनना चाहता हूँ।" पिता पहले तो चौंके, लेकिन अंकुर के आत्मविश्वास को देखकर उन्होंने उसका हौसला बढ़ाया।

शारीरिक और मानसिक रूप से खुद को तैयार करना

फिर शुरू हुआ अंकुर का असली संघर्ष। पुलिस अफसर बनने की राह आसान नहीं थी। अंकुर ने दिन-रात पढ़ाई की, शारीरिक और मानसिक रूप से खुद को तैयार किया। उसके जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए, कई बार वो हताश हुआ, लेकिन हर बार उसके भीतर का जुनून उसे आगे बढ़ाता रहा। अंकुर की यह ज़िद्द थी कि वो हार मानने वालों में से नहीं था।

आखिरकार, अंकुर का वो दिन आया जब उसकी मेहनत रंग लाई। वो एक बड़े पुलिस अफसर के रूप में चयनित हुआ। अब अंकुर सिर्फ एक इंजीनियर नहीं था, बल्कि समाज का रक्षक बन चुका था। अब वो अपने लोगों की सेवा करता था, अन्याय के खिलाफ खड़ा होता था और अपनी निष्ठा और ईमानदारी से लोगों का दिल जीतता था।

अंकुर का सफर आज भी जारी है। उसने अपने सपनों को साकार करने के लिए संघर्ष किया, अपनी कमज़ोरियों को ताकत में बदला और अपनी संवेदनशीलता को अपने काम की शक्ति बना दिया। उसकी मेहनत अब भी जारी है, क्योंकि अंकुर मानता है कि असली सफलता तब है जब आप खुद से संतुष्ट हों और वो संतुष्टि अभी बाकी थी।

सीख : अगर दिल में सच्चे इरादे हों और मेहनत से डरे बिना अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ा जाए तो कोई भी सपना असंभव नहीं होता।

हरमू रोड-रांची(झारखंड)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. प्रदीप, चार्टर्ड अकाउंटेंट अंजिला गोयनका, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. वी.के. जगनानी, राजेन्द्र इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के सेवानिवृत्त स्त्री रोग विशेषज्ञा प्रो. डॉ. माया वर्मा एवं स्त्री रोग विशेषज्ञा डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव।

फतेहगढ़-उ.प्र.। शिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रभु स्मृति में जिलाधिकारी डॉ. आशुतोष द्विवेदी, अपर पुलिस अधीक्षक डॉ. संजय कुमार सिंह, नगरपालिका अध्यक्ष वत्सला अग्रवाल, ब्र.कु. सुमन दीदी, ब्र.कु. राधिका तथा अन्य।

आगरा-आर्ट गैलरी(उ.प्र.)। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित रैली में उपस्थित हैं ब्र.कु. माला, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. महावीर तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

भागलपुर-बिहार। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर बैजनाथ रुंगटा स्मृति भवन में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता, राजीव रंजन,बीडीओ,कहलगांव, समाजसेवी शुभानंद मुकेश एवं संजीव कुमार अध्यक्ष,नगर पंचायत,कहलगांव।

ऋषिकेश-उत्तराखंड। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आरती, मेयर शंभू पासवान, ढालवाला नगरपालिका अध्यक्ष नीलम बिजल्वाण तथा अन्य।

तिनसुकिया-असम। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'अपनी दिव्य शक्ति और उद्देश्य को पुनः प्राप्त करें' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. सुमी, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

पंजाबी बाग-दिल्ली। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् क्षेत्रीय निगम पार्षद सुमन त्यागी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कोकिला।